www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2023) वर्ष 3, अंक 1, 24-25

Article ID: 251

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बाजरा की खेती

राम प्रकाश*, शारदा शरण, वीरेंद्र सिंह****

*शोध छात्र, **एम.एस.सी.

शस्य विज्ञान विभाग,

*आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

**राजा बलवंत सिंह कॉलेज, बिचपुरी आगरा, (उत्तर प्रदेश)

मोटे अनाजों में बाजरा सबसे अधिक महत्वपूर्ण फसल है। उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में जाड़ों में भोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली गरीब की मुख्य फसल है। जाड़े के दिनों में विभिन्न निर्धन लोग ही नहीं अपितु संपन्न लोग भी बाजरा की रोटी खाना पसंद करते हैं। बाजरा की फसल को हर एवं शुष्क चारे के प्रयोजन से भी उगाया जाता है। लगभग बाजरा में लगभग 12% प्रोटीन, 68% कार्बोहाइड्रेट तथा 2.5% खनिज पाए जाते हैं।

जलवायु:-

हमारे देश में बाजरा खरीफ सीजन में बोया जाता है।बाजरा की फसल के लिए सबसे उपयुक्त तापक्रम 21 से 27 डिग्री सेल्सियस होता है। बाजरा प्राय और स्थानों में सबसे अधिक बोया जाता है। जहां की वार्षिक वर्षा 40 से 75 सेंटीमीटर तक होती है। फसल काटते समय स्वच्छ वातावरण एवं तेज धूप की आवश्यकता होती है।

भूमि तथा उसकी तैयारी:-

बाजरा की खेती के लिए हल्की दोमट भूमि उपयुक्त होती है। इसकी खेती के लिए अधिक उपजाऊ एवं अच्छे जल निकास वाली भूमि सबसे उपयुक्त रहती है।बाजरा की फसल के लिए भूमि की अच्छी तैयारी की आवश्यकता होती है। एक बार मिट्टी पलट हल से 15 से 20 सेंटीमीटर गहरी जुताई करने के उपरांत दो बार देशी हल या कल्टीवेटर से जुताई कर करना पर्याप्त होता है।

बाजरा की नवीनतम उन्नतशील प्रजातियां:-

प्राप्त करने हेतु जातियों का होना चाहिए एवं क्षेत्रफल के आधार पर प्रजाति का चयन करें पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए सर्वोत्तम मानी गई है।

खाद तथा उर्वरक:-

उर्वरकों का प्रयोग करने से पहले मृदा की जांच करवानी चाहिए और उर्वरकों की मात्रा सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों के लिए अलग-अलग होती है। सिंचित क्षेत्रोंमें नाइट्रोजन 80 से 100 केजी, फास्फोरस 40 से 50 केजी एवं पोटाश 40 से 50 केजी प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग किया जा सकता है। सामान्यतः नाइट्रोजन आदि एवं फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय दी जानी चाहिए नाइट्रोजन की मात्रा दो भागों में 3 सप्ताह एवं 5 सप्ताह बाद प्रयोग कर सकते है। इन क्षेत्रों के शुष्क एवं वर्षा वाले क्षेत्रों में नाइट्रोजन 30 से 40 केजी एवं प्रयोग किया जा सकता है। का समय बुवाई का समय उत्तर प्रदेश में बाजरा की फसल खरीद ली जाती है पश्चिमी जिलों में शुरू हो जाने के बाद 15 जुलाई से 30 जुलाई तक की जाती है। इसके पहले वही गई फसल में फूल आने के समय अधिक वर्षा होने का संभावना होती है। जिसके कारण फूलों से पराग धूल जाने का कारण रहता है।

बीज की मात्रा तथा बुवाई का ढंग:-

खरीफ सीजन में बोई जाने वाली फसल में अधिक वीर डालना चाहिए। क्योंकि कभी-कभी वर्षा अधिक हो जाने से भूमि में पानी भर जाता है। इसी कारण अंकुरण सही से नहीं हो पाता है सामान्य तौर पर अन्य के लिए वही जाने वाली फसल के लिए चार से पांच केजी बीज की आवश्यकता होती है। तथा चारे की फसल के लिए 10 से 15 केजी पर हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

बाजरा की बुवाई मशीन से या देशी हल से या विधि से की जा सकती है। तथा कतार से कतार की दूरी 45 सेंटीमीटर एवं 3 से 4 से सेंटीमीटर की गहराई होनी चाहिए।

सिंचाई एवं जल निकास:-

उत्तर भारत में बाजरा की फसल वर्षा पर आधारित होती है।यदि समय पर बरसाना हो तो पलेवा करके बाजरा की बुवाई करनी चाहिए और फसल में फूल आते समय भूमि नवमी होना आवश्यक है।वर्षा ऋतु में भूमि जल निकास का समुचित प्रबंध होना चाहिए।

खरपतवार प्रबंध:-

वर्षा ऋतु में बोई जाने वाली फसल में खरपतवारओं समस्या अधिक रहती है।फसल बुवाई के 3 सप्ताह बाद कुर्ती या कानपुर कल्टीवेटर के द्वारा निराई गुड़ाई की जा सकती है।रासायनिक विधि से खरपतवार को नियंत्रण करने के लिए नामक दवा को के बाद अंकुरण से पहले 1 केजी मात्रा पर हेक्टेयर 700 से 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव किया जाना चाहिए कटाई का समय बाजरा की फसल अक्टूबर के अंत तक तैयार हो जाती है।

बाजरा कटाई:-

बाजरे की एवं समय पर निर्भर करती है। बाजरे की प्रजातियां लगभग 3 महीने में तैयार हो जाती है। गानों में नमी की मात्रा 20% रहने पर बालियां काट ली जाती है। बाजरा की बालियों को भलीभांति सुखाकर को अलग कर लिया जाता है।

फसल सुरक्षा कीट नियंत्रण:-

अधिक उपज पाने के लिए कीटों की रोकथाम बहुत जरूरी है। बाजरा को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों की रोकथाम इस प्रकार करें

दीमक:-

जिन खेतों में दीमक का प्रकोप अधिक होता है। वहां बुवाई के समय सॉरी भाई के वाई करने से पूर्व खेत में 25 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से एल्डरिन 5% धूल का प्रयोग करना चाहिए।

तना मक्खी:-

यह कीड़ा पौधों को प्रारंभिक अवस्था में काट देता है। जिससे पौधे सूख जाते है। इसकी रोकथाम के लिए बुवाई से पूर्व खेत में ईमेट फॉरेस्ट 15 कि.ग्रा. की प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए

रोग नियंत्रण

हरित बालियों वाला रोग:-

इस रोग से संक्रमित पौधों में रह जाते हैं, पत्ते पीले पड़ जाते है। और पत्तियों की निचली सतह पर सफेद पाउडर से जमा हो जाता है।पत्ते सूखने शुरू हो जाते है।तथा पौधा नष्ट हो जाते है।हरित बालियों की स्थिति में संभावित बालियां घास जैसा रूप धारण कर लेती है। जो काफी समय तक फ्री रहती है। इसकी रोकथाम के लिए बीज को एक रोशन जी एन नामक दवा से उपचार करना चाहिए।

अरगड:-

रोग ग्रस्त वालियों से हल्दी या गुलाबी रंग का चिपचिपा गाढ़ा रस टपकने लगता है। जो कि बाद में गहरा बुरा हो जाता है। इसकी रोकथाम के लिए फूल आने के तुरंत बाद जिन्हें 75% डब्लू पी का तो कीजिए प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

कंडुवा:-

बालियों की शुरू की अवस्था में जगह-जगह रोग ग्रस्त दाने बनते है। जो आकार में बड़े चमकदार व गहरे हरे रंग के हो जाते हैं अंत में इनमें काले रंग का पाउडर से भर जाता है। यह रोगजनक फफूंद के बीजाणु होते है। इसकी रोकथाम के लिए बीज को कैप्टन नामक दवा से उपचारित करना चाहिए।

उत्पादन व भण्डारण :-

बाजरे की खेती से बाजरे का उत्पादन लगभग 25 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो जाता है। जबकि 70 क्विंटल तक सुखा चारा मिल जाता है। अनाज के भण्डारण के लिए नमी रहित स्थान पर बोरे भरकर रखना चाहिए।